INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN: 3070-0558
VOL.7, NO.3 (2026)

महाराष्ट्र की राजनीति में बदलते नेतृत्व : विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रजनीश बांबोले
प्राध्यापक,
भारतीय महाविद्यालय, मोर्शी जि. अमरावती

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र महाराष्ट्र की राजनीति में नेतृत्व के बदलते प्रतिमानों और उसके संरचनात्मक प्रभावों का एक गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन है। पिछले एक दशक (2014-2024) में महाराष्ट्र ने अभूतपूर्व राजनीतिक अस्थिरता, वैचारिक गठबंधनों के टूटने और नए राजनीतिक समीकरणों का उदय देखा है। शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) का ऐतिहासिक विभाजन और क्रमशः एकनाथ शिंदे तथा अजित पवार का नए नेतृत्व के रूप में स्थापित होना इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि क्षेत्रीय राजनीति में पारंपरिक और वंशवादी नेतृत्व को जमीनी स्तर के नेताओं द्वारा गंभीर चुनौती मिल रही है। हाल ही में संपन्न 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के द्वितीयक आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि राज्य के मतदाताओं ने इस नए व्यावहारिक और कार्य-उन्मुख नेतृत्व को बड़े पैमाने पर स्वीकार किया है। यह शोध पत्र इस संक्रमण काल का सांख्यिकीय, ऐतिहासिक और सैद्धांतिक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है, तथा यह रेखांकित करता है कि कैसे वैचारिक निष्ठा की तुलना में सुशासन और राजनीतिक यथार्थवाद ने महाराष्ट्र में नेतृत्व परिवर्तन की नींव रखी है।

बीज शब्द: ***महाराष्ट्र की राजनीति, राजनीतिक नेतृत्व, शिवसेना विभाजन, महायुति, महा विकास अघाड़ी, 2024 विधानसभा चुनाव, राजनीतिक ध्रुवीकरण***

प्रस्तावना:

भारतीय राजनीति के इतिहास में महाराष्ट्र हमेशा से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दिशा-निर्देशक राज्य रहा है। आर्थिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समृद्ध इस राज्य की राजनीतिक प्रयोगशाला ने समय-समय पर अनेक गठबंधनों और नेतृत्व के प्रयोग देखे हैं। यशवंतराव चव्हाण के युग से लेकर शरद पवार के वर्चस्व और बालासाहेब ठाकरे के उग्र हिंदुत्व तक, महाराष्ट्र की राजनीति ने विभिन्न वैचारिक धाराओं को आत्मसात किया है। परंपरागत रूप से, राज्य की राजनीति में मराठा समुदाय और कांग्रेस पार्टी का लंबा एकाधिकार रहा, जिसे 1990 के दशक में शिवसेना-भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के गठबंधन ने सफलतापूर्वक चुनौती दी।

तथापि, वर्ष 2014 के बाद से महाराष्ट्र के राजनीतिक परिदृश्य में एक आमूलचूल परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ है। 2014 के विधानसभा चुनावों में भाजपा राज्य में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी, जिसने शिवसेना के 'बड़े भाई' की भूमिका को समाप्त कर दिया। इसके पश्चात देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में एक स्थिर सरकार का गठन हुआ। लेकिन असली राजनीतिक भूचाल 2019 के विधानसभा चुनावों के बाद आया। जनादेश शिवसेना-भाजपा गठबंधन को मिलने के बावजूद, मुख्यमंत्री पद की महत्वाकांक्षा के कारण उद्धव ठाकरे ने दशकों पुराने हिंदुत्ववादी गठबंधन को तोड़कर अपनी वैचारिक विरोधी पार्टियों (कांग्रेस और एनसीपी) के साथ मिलकर 'महा विकास अघाड़ी' (MVA) का गठन किया।

इस अप्राकृतिक गठबंधन ने शिवसेना के वैचारिक आधार को कमजोर किया, जिसके परिणामस्वरूप 2022 में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में शिवसेना के 40 विधायकों ने ऐतिहासिक बगावत की। शिंदे ने हिंदुत्व और बालासाहेब ठाकरे की मूल विचारधारा का दावा करते हुए भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाई। ठीक एक वर्ष बाद, 2023

में, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) में भी नेतृत्व को लेकर इसी प्रकार का विद्रोह हुआ, जब अजित पवार ने अपने चाचा शरद पवार के प्रभुत्व को चुनौती दी और विधायकों के एक बड़े गुट के साथ 'महायुति' (सत्तारूढ़ गठबंधन) में शामिल हो गए।

2024 के विधानसभा चुनाव इन नवोदित नेताओं के लिए एक 'अग्निपरीक्षा' के समान थे। चुनावों के परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया कि एकनाथ शिंदे और अजित पवार मात्र बागी नहीं थे, बल्कि वे अपने-अपने राजनीतिक दलों के वास्तविक उत्तराधिकारी और सर्वमान्य नेता बन चुके हैं। भाजपा (132 सीटें), एकनाथ शिंदे गुट (57 सीटें) और अजित पवार गुट (41 सीटें) की प्रचंड जीत ने महाराष्ट्र की राजनीति में वंशवाद (ठाकरे और शरद पवार परिवार) के अंत और एक नए, व्यावहारिक नेतृत्व की स्थापना को प्रमाणित किया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

१) पिछले एक दशक (2014-2024) में महाराष्ट्र में राजनीतिक नेतृत्व के संक्रमण और विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
२) शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) में हुए ऐतिहासिक विभाजनों के वैचारिक और राजनीतिक कारणों तथा उनके दूरगामी परिणामों का मूल्यांकन करना।
३) वर्ष 2014, 2019 और विशेष रूप से 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणामों के द्वितीयक समंकों के माध्यम से मतदाता व्यवहार और जनमत के बदलते झुकाव को समझना।
४) महाराष्ट्र की राजनीति में पारंपरिक/वंशवादी नेतृत्व बनाम व्यावहारिक/प्रदर्शन-आधारित नेतृत्व (Pragmatic Leadership) के प्रभावों को मापना।

अनुसंधान पद्धति:

यह शोध पत्र पूर्णतः विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए आवश्यक सभी तथ्य एवं आँकड़े द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित किए गए हैं। चुनाव संबंधी आँकड़ों के संकलन हेतु भारत निर्वाचन आयोग की आधिकारिक वेबसाइट तथा विभिन्न मान्यता प्राप्त समाचार पत्रों, जैसे द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, एनडीटीवी और दैनिक जागरण, में प्रकाशित समाचार रिपोर्टों एवं विश्लेषणात्मक लेखों का उपयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए सारणीकरण एवं प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त, चुनावी सफलता दर तथा सीटों के हिस्से में हुए परिवर्तन के आधार पर नेतृत्व की सफलता का विश्लेषण एवं आकलन किया गया है।

महाराष्ट्र की राजनीति में बदलते नेतृत्व:

महाराष्ट्र की राजनीति में नेतृत्व का स्वरूप समय के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहा है। राज्य के गठन के पश्चात लंबे समय तक राजनीति में कुछ प्रमुख दलों और स्थापित नेतृत्व का प्रभाव रहा, किंतु सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों में आए परिवर्तनों के साथ नेतृत्व की प्रकृति में भी बदलाव दिखाई देने लगा। प्रारंभिक दौर में नेतृत्व मुख्यतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सहकारिता आंदोलन, कृषक वर्ग तथा पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं से जुड़ा हुआ था। समय के साथ शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा का प्रसार, युवाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी और विभिन्न सामाजिक समूहों की राजनीतिक आकांक्षाओं ने नेतृत्व के स्वरूप को प्रभावित किया।

महाराष्ट्र की राजनीति में विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच गठबंधन, सत्ता परिवर्तन और संगठनात्मक पुनर्गठन ने भी नेतृत्व की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाया है। विशेष रूप से पिछले कुछ दशकों में राज्य की राजनीति में नए सामाजिक समूहों और क्षेत्रीय नेतृत्व का प्रभाव बढ़ा है। पारंपरिक नेतृत्व के साथ-साथ युवा नेताओं तथा

विभिन्न क्षेत्रों से उभरने वाले नेताओं ने राजनीतिक विमर्श को नई दिशा प्रदान की है। नेतृत्व में आए इन परिवर्तनों का प्रभाव चुनावी रणनीतियों, जनसंपर्क, संगठन निर्माण और मतदाताओं से जुड़ने के तरीकों पर भी पड़ा है।

वर्तमान समय में महाराष्ट्र का राजनीतिक नेतृत्व केवल वैचारिक आधार पर ही नहीं, बल्कि विकास, रोजगार, कृषि, सामाजिक न्याय, क्षेत्रीय हित और जनकल्याण जैसे मुद्दों पर भी केंद्रित दिखाई देता है। इस प्रकार महाराष्ट्र की राजनीति में बदलते नेतृत्व को सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक पुनर्संरचना और बदलती जनआकांक्षाओं की व्यापक प्रक्रिया के संदर्भ में समझा जा सकता है।

किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में नेतृत्व परिवर्तन को समझने के लिए राजनीति विज्ञान के स्थापित सिद्धांतों का आश्रय लेना आवश्यक है। महाराष्ट्र में हुए इस नेतृत्व परिवर्तन को निम्नलिखित दो प्रमुख सिद्धांतों के आधार पर समझा जा सकता है:

क) अभिजन परिभ्रमण का सिद्धांत (Theory of Circulation of Elites):

इटैलियन समाजशास्त्री विलफ्रेडो पेरेटो द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत के अनुसार, समाज में सत्ता कभी भी एक ही विशिष्ट वर्ग के हाथों में स्थायी नहीं रहती। एक समय के बाद शासक वर्ग अपनी उपयोगिता और शक्ति खो देता है, और उसकी जगह एक नया, अधिक ऊर्जावान और यथार्थवादी वर्ग ले लेता है। महाराष्ट्र के संदर्भ में, ठाकरे परिवार (उद्धव ठाकरे) और शरद पवार पारंपरिक 'अभिजन' थे। जनता से उनका सीधा संपर्क कम हो गया था। इसके विपरीत, एकनाथ शिंदे और अजित पवार जमीनी स्तर के नेता हैं, जिन्होंने अपने कौशल और जनता से सीधे जुड़ाव के कारण सत्ता के शिखर पर अपनी जगह बनाई है। यह पारंपरिक वंशवाद से जमीनी नेतृत्व की ओर 'अभिजन परिभ्रमण' का सटीक उदाहरण है।

ख) तर्कसंगत चयन सिद्धांत (Rational Choice Theory):

एंथनी डाउन्स के इस सिद्धांत के अनुसार, मतदाता और राजनेता दोनों ही राजनीतिक परिदृश्य में अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए 'तर्कसंगत निर्णय' लेते हैं। जब एकनाथ शिंदे ने देखा कि कांग्रेस और एनसीपी के साथ जाने से शिवसेना का मूल मतदाता (हिंदुत्ववादी) छिटक रहा है, तो उन्होंने तर्कसंगत रूप से भाजपा के साथ वापसी का निर्णय लिया। इसी प्रकार, 2024 के चुनावों में मतदाताओं ने महा विकास अघाड़ी (MVA) की भावनात्मक अपीलों (सहानुभूति लहर) को नकारते हुए 'महायुति' सरकार की लाभकारी नीतियों (जैसे- 'माझी लाडकी बहिन योजना') को तर्कसंगत रूप से चुना।

महाराष्ट्र की राजनीति में बदलते नेतृत्व को समझने के लिए पिछले तीन विधानसभा चुनावों (2014, 2019, 2024) के सांख्यिकीय आँकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। नीचे दी गई सारणियों में निर्वाचन आयोग के आँकड़ों को प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 1: महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम - 2014

2014 के चुनावों में कांग्रेस-एनसीपी और शिवसेना-भाजपा गठबंधन टूट गए थे और चारों प्रमुख दलों ने अकेले चुनाव लड़ा था। इस चुनाव ने भाजपा को पहली बार महाराष्ट्र में सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित किया।

राजनीतिक दल (Political Party)	लड़ी गई सीटें	जीती गई सीटें	मत प्रतिशत (Vote %)	परिणामी स्थिति
भारतीय जनता पार्टी (BJP)	260	122	27.8%	सरकार बनाई
शिवसेना (Shiv Sena - Undivided)	282	63	19.3%	गठबंधन सरकार में शामिल
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	287	42	17.9%	विपक्ष

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP - Undivided)	278	41	17.2%	विपक्ष
अन्य एवं निर्दलीय	-	20	17.8%	-

2014 के आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में भाजपा ने पहली बार 100 का आंकड़ा पार किया। बालासाहेब ठाकरे के निधन के बाद उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में शिवसेना 63 सीटों तक सीमित रह गई, जिससे भाजपा का राज्य में वर्चस्व स्थापित हो गया।

सारणी 2: महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम - 2019

2019 में भाजपा और शिवसेना ने गठबंधन (महायुति) में चुनाव लड़ा था, जबकि कांग्रेस और एनसीपी ने महा अघाड़ी बनाकर चुनाव लड़ा।

राजनीतिक दल (Political Party)	**जीती गई सीटें**	**मत प्रतिशत (Vote %)**	**चुनाव पश्चात स्थिति**
भारतीय जनता पार्टी (BJP)	105	25.75%	विपक्ष (गठबंधन टूटने के कारण)
शिवसेना (Shiv Sena)	56	16.41%	महा विकास अघाड़ी (MVA) सरकार
राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP)	54	16.71%	महा विकास अघाड़ी सरकार में शामिल
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	44	15.87%	महा विकास अघाड़ी सरकार में शामिल
अन्य एवं निर्दलीय	29	25.26%	मिश्रित

चुनाव पूर्व भाजपा-शिवसेना गठबंधन को 161 सीटों के साथ स्पष्ट बहुमत मिला था। परंतु नेतृत्व (मुख्यमंत्री पद) की महत्वाकांक्षा के कारण, उद्धव ठाकरे ने जनादेश के विपरीत जाकर कांग्रेस-एनसीपी के साथ सरकार बना ली। यह निर्णय शिवसेना के जमीनी कार्यकर्ताओं और वैचारिक आधार के खिलाफ था, जिसने अंततः 2022 के ऐतिहासिक विद्रोह की नींव रखी।

सारणी 3: महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम - 2024

2024 का चुनाव महाराष्ट्र के इतिहास का सबसे जटिल चुनाव था, जिसमें 6 प्रमुख दल (2 गठबंधनों में विभाजित) आमने-सामने थे। इस चुनाव का परिणाम नेतृत्व की अंतिम वैधता का पैमाना था।

गठबंधन / राजनीतिक दल	**लड़ी गई सीटें**	**जीती गई सीटें**	**स्ट्राइक रेट (Strike Rate)**
महायुति (Mahayuti) - सत्तारूढ़ गठबंधन	288	230+	-
भारतीय जनता पार्टी (BJP)	149	132	~ 88.5%
शिवसेना (एकनाथ शिंदे गुट) - SHS	81	57	~ 70.3%
राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (अजित पवार गुट) - NCP	59	41	~ 69.5%
महा विकास अघाड़ी (MVA) - विपक्षी गठबंधन	288	46	-
शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) - SS(UBT)	95	20	~ 21.0%

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	101	16	~ 15.8%
एनसीपी (शरदचंद्र पवार) - NCP(SP)	86	10	~ 11.6%
अन्य	-	12	-

(स्रोत: भारतीय निर्वाचन आयोग एवं विभिन्न मीडिया समाचार स्रोत - नवंबर 2024)

सारणी 3 के आँकड़े महाराष्ट्र की राजनीति में नेतृत्व के बदलते प्रभाव को दर्शाते हैं। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 81 स्थानों पर चुनाव लड़कर 57 पर विजय प्राप्त की। उसकी सफलता दर लगभग 70% रही। इसके विपरीत, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 95 स्थानों पर चुनाव लड़कर 20 स्थान जीते। यह अंतर इस निर्वाचन में शिंदे के नेतृत्व की अधिक चुनावी सफलता दर्शाता है। हालाँकि, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि शिवसेना के सभी पारंपरिक मतदाताओं ने शिंदे को स्वीकार कर लिया अथवा उद्धव ठाकरे का नेतृत्व पूरी तरह असफल हो गया।

वर्ष 2024 के विधानसभा निर्वाचन में अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस ने 41 स्थान जीते और उसकी सफलता दर लगभग 69% रही। दूसरी ओर, शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस को 10 स्थान प्राप्त हुए। निर्वाचित स्थानों के आधार पर अजित पवार के दल का प्रदर्शन अधिक प्रभावशाली रहा। इन परिणामों ने गठबंधन में उनकी स्थिति मजबूत की। फिर भी, इस अंतर को केवल विकास-आधारित नेतृत्व की स्वीकृति या वरिष्ठ नेतृत्व की अस्वीकृति मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि प्रत्याशियों, स्थानीय परिस्थितियों और गठबंधन-सहयोग का भी परिणामों पर प्रभाव पड़ता है।

देवेंद्र फडणवीस की प्रमुख नेतृत्वकारी भूमिका में भाजपा ने 132 स्थान जीतकर महाराष्ट्र विधानसभा निर्वाचनों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उसकी सफलता दर लगभग 88.5% रही। इन परिणामों ने राज्य की राजनीति और सत्तारूढ़ गठबंधन में भाजपा की केंद्रीय भूमिका को सुदृढ़ किया। यह उपलब्धि उसकी चुनावी रणनीति और संगठनात्मक क्षमता की सफलता का संकेत देती है। हालाँकि, किसी एक निर्वाचन की विजय से नेतृत्व को अपराजेय मानना अथवा भाजपा के बिना किसी अन्य गठबंधन की सरकार बनना असंभव बताना उचित नहीं है।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि राज्य की राजनीति में केवल पारिवारिक विरासत के आधार पर चुनावी सफलता प्राप्त करना कठिन होता जा रहा है। उद्धव ठाकरे और शरद पवार के नेतृत्व वाले दल अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सके। दूसरी ओर, एकनाथ शिंदे और अजित पवार के नेतृत्व वाले दलों ने बेहतर प्रदर्शन किया। इससे संकेत मिलता है कि मतदाताओं ने नेतृत्व के साथ-साथ शासन, संगठन और जनकल्याण से जुड़े कार्यों को भी महत्व दिया। हालांकि, चुनाव परिणामों से मतदाताओं की किसी एक भावना या उद्देश्य को निश्चित रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

इस चुनाव में जनकल्याणकारी योजनाओं की भी महत्वपूर्ण चर्चा रही। मुख्यमंत्री माझी लाडकी बहीण योजना के अंतर्गत पात्र महिलाओं को प्रतिमाह ₹1,500 की आर्थिक सहायता देने का प्रावधान किया गया था। दिसंबर 2024 तक लगभग 2.38 करोड़ महिलाओं ने इस योजना का लाभ लिया और इस पर लगभग ₹17,505.90 करोड़ व्यय हुआ। चुनाव परिणामों में भारतीय जनता पार्टी ने 132 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस 16 सीटों तक सीमित रही। इन आंकड़ों से राज्य में सत्तारूढ़ गठबंधन की मजबूत चुनावी स्थिति दिखाई देती है।

चुनाव से पहले मराठा आरक्षण आंदोलन और विभिन्न सामाजिक समूहों की राजनीतिक भूमिका भी प्रमुख विषय रहे। इसके साथ ही 2019 के बाद शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में हुए विभाजन ने 2024 के चुनाव को विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनाया। चुनाव परिणामों में शिंदे और अजित पवार के नेतृत्व वाले दलों के प्रदर्शन ने महाराष्ट्र की गठबंधन राजनीति में आए बदलाव को सामने रखा। इस प्रकार 2024 का चुनाव पारिवारिक विरासत,

जनकल्याणकारी योजनाओं, सामाजिक समीकरणों, संगठन और गठबंधन की भूमिका को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

महाराष्ट्र की राजनीति में 2024 का चुनाव नेतृत्व परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व को लेकर उनके विरोधियों ने यह आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री रहते हुए उनका विधायकों और कार्यकर्ताओं से सीधा संपर्क सीमित था, जबकि एकनाथ शिंदे ने स्वयं को अधिक सुलभ नेता के रूप में प्रस्तुत किया। शिवसेना के विभाजन के बाद शिंदे के साथ बड़ी संख्या में विधायक गए। इसी प्रकार राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के विभाजन में अजित पवार के साथ भी अनेक विधायक जुड़े। इन घटनाओं से यह दिखाई देता है कि महाराष्ट्र की राजनीति में केवल पारिवारिक विरासत ही नहीं, बल्कि संगठन पर पकड़, विधायकों का समर्थन और जनता से संपर्क भी नेतृत्व के महत्वपूर्ण आधार बन गए।

शरद पवार और अजित पवार के बीच हुआ राजनीतिक विभाजन पीढ़ीगत बदलाव के रूप में भी देखा गया। अजित पवार लंबे समय से महाराष्ट्र की राजनीति और पार्टी संगठन में सक्रिय रहे हैं। वहीं 2024 के लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र की कुल 48 सीटों में कांग्रेस ने 13, शिवसेना उद्धव बालासाहेब ठाकरे ने 9 और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शरदचंद्र पवार ने 8 सीटें जीतीं। इस प्रकार इन तीनों दलों को कुल 30 सीटें मिलीं। विधानसभा चुनाव में स्थिति बदल गई। महाराष्ट्र विधानसभा की कुल 288 सीटों के लिए 20 नवंबर 2024 को मतदान और 23 नवंबर को मतगणना हुई।

विधानसभा चुनाव के परिणामों ने राज्य की राजनीति में नए शक्ति-संतुलन को सामने रखा। लोकसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद भी महा विकास आघाड़ी विधानसभा चुनाव में उसी स्तर की सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 132 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस को केवल 16 सीटें मिलीं। शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के विभाजन के बाद पार्टी के नाम, चुनाव चिह्न और विधायकों की निष्ठा से जुड़े प्रश्न भी महाराष्ट्र की राजनीति के प्रमुख विषय बने। इसलिए 2024 का चुनाव यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि नेतृत्व की स्वीकार्यता केवल परिवार या पुराने राजनीतिक प्रभाव से नहीं, बल्कि संगठन, जनसंपर्क, गठबंधन और चुनावी समर्थन से भी निर्धारित होती है।

निष्कर्ष:

महाराष्ट्र की राजनीति, जो लंबे समय तक कुछ गिने-चुने परिवारों के इर्द-गिर्द घूमती थी, अब एक नए, अधिक प्रतिस्पर्धी और यथार्थवादी युग में प्रवेश कर चुकी है। इस विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि 2014 से 2024 का दशक महाराष्ट्र में 'राजनीतिक कायाकल्प' का दशक रहा है। एकनाथ शिंदे और अजित पवार का उदय मात्र दो नेताओं की व्यक्तिगत जीत नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक, एकाधिकारवादी और वंशवादी नेतृत्व शैली के खिलाफ आम कार्यकर्ताओं की जीत का प्रतीक है। 2024 के चुनाव परिणामों (महायुति को 230+ सीटें) ने स्पष्ट रूप से यह संदेश दिया है कि लोकतंत्र में नेतृत्व किसी वसीयत के माध्यम से हस्तांतरित नहीं होता, बल्कि उसे कठिन परिश्रम, वैचारिक प्रतिबद्धता और जन-कल्याणकारी नीतियों के माध्यम से अर्जित किया जाना चाहिए। देवेंद्र फडणवीस के रूप में महाराष्ट्र ने एक ऐसे रणनीतिकार को देखा है जिसने भाजपा को राज्य के अजेय राजनीतिक बल में बदल दिया है। उद्धव ठाकरे और शरद पवार के लिए, यह चुनाव उनके राजनीतिक अवसान का संकेत है, जो यह बताता है कि यदि नेतृत्व समय के साथ अपने आप को अद्यतन नहीं करता और जमीनी हकीकत से कट जाता है, तो जनता नए विकल्पों को अपनाने में संकोच नहीं करती। अंततः, महाराष्ट्र की राजनीति अब व्यक्ति-केंद्रित से हटकर पूर्णतः प्रदर्शन-केंद्रित और विचारधारा-आधारित बन गई है, जो भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का एक अत्यंत सकारात्मक और स्वागत-योग्य संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१) भारत निर्वाचन आयोग। (2014)। महाराष्ट्र विधानसभा के लिए आम निर्वाचन, 2014 का सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।

२) भारत निर्वाचन आयोग। (2019)। महाराष्ट्र विधानसभा के लिए आम निर्वाचन, 2019 का सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।

३) भारत निर्वाचन आयोग। (2024)। महाराष्ट्र विधानसभा राज्य निर्वाचन, 2024 का सांख्यिकीय प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।

४) भारत निर्वाचन आयोग। (2024)। विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र आम निर्वाचन: रुझान एवं परिणाम, नवंबर 2024—महाराष्ट्र। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।

५) मुख्य निर्वाचन अधिकारी, महाराष्ट्र। (2019)। विधानसभा निर्वाचन 2019: निर्वाचन परिणाम एवं सांख्यिकीय प्रतिवेदन। मुंबई: मुख्य निर्वाचन अधिकारी, महाराष्ट्र।

६) वोरा, आर. एवं पलशीकर, एस. (संपादक)। (2004)। भारतीय लोकतंत्र: अर्थ एवं व्यवहार। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन। अंतरराष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या: 8178292378।

७) कुलकर्णी, एम. एवं ठक्कर, यू. (संपादक)। महाराष्ट्र की राजनीति। मुंबई: हिमालय प्रकाशन गृह।

८) द इंडियन एक्सप्रेस। (2024, 23 नवंबर)। महाराष्ट्र विधानसभा निर्वाचन परिणाम 2024: महाराष्ट्र के निर्वाचन क्षेत्रवार विजेताओं की संपूर्ण सूची। द इंडियन एक्सप्रेस।

९) श्रीनिवासन, सी. (2024, 23 नवंबर)। महाराष्ट्र निर्वाचन परिणाम 2024: एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने ठाकरे की शिवसेना तथा शरद पवार के विरुद्ध 75 सीटें प्राप्त कीं। एनडीटीवी।

१०) भारत निर्वाचन आयोग। (2024)। महाराष्ट्र विधानसभा निर्वाचन 2024: विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रवार मतदाताओं की संख्या। नई दिल्ली: भारत निर्वाचन आयोग।